# उत्तर प्रदेष माध्यमिक षिक्षा परिशद की परीक्षा प्रणाली एवं सुधार का तुलनात्मक अध्ययन

**शोधार्थी**

**उत्कर्ष कुमार सिंह,**

**शिक्षाशास्त्र विभाग श्री गणेशराय स्नातकोत्तर महाविद्यालय**

**डोभी जौनपुर,**

**सम्बध वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर**

**प्रस्तावना–**

सबसे पहले हम इस बात पर विचार करते है कि षिक्षा किस हद तक एक विषेशीकृत सामाजिक गतिविधि हैं सरलतम समाजों में जहाँ वैसे भी बहुत कम विषेशीकृत प्रकार्य होते है। एक अलग गतिविधि के बतौर संगठित नहीं होती वह उनकी रोजमर्रा की जिदंगी में भागीदारी के जरिए परिवार नातेदारी समूह और संपूर्ण समाज द्वारा प्रदान की जाती है। इसका मतलब यह है कि मनुश्य स्वयं एक बौद्धिक प्राणी है। षिक्षा का कार्य केवल इन बौद्धिक गुणों का विकास करना होता है। साथ ही इसका उद्देष्य व्यक्ति को पर्यावरण के अनुकूल करने की क्षमता प्रदान करना है। महात्मा गांधी –''षिक्षा से मेरा अभ्रिपाय बच्चे के षरीर, मन आत्मा में विद्यमान सर्वोत्तम गुणों का विकास करना है।'' बाउन तथा रासेक –''षिक्षा का अनुमान की पूर्ण वह संपूर्णता है जो किषोर और वयत्क दोनों की अभिवृत्तियों को प्रभावित करती है। दुखीर्म–षिक्षा ऐसी गतिविधि है जिसे पुरानी पीढ़िया उन लोगों के साथ करती है। जो सामाजिक जीवन के लिए अभी तैयार नहीं हुए होते है। इसका उद्देष्य है। बच्चों में उन षारीरिक बौद्धिक और नैतिक हालात की जगाना और विकसित करना जिसकी मांग कुल मिलाकर समाज और वह वातावरण जिसमें खासकर उनका रहना तय है। ये दोनो उनसे करते है। यह गतिविधि, नई पीढ़ियों का समाजीकरण सभी समाजों में अनिवार्य रूप से होती है।

वैदिक को गुप्त काल से सीखने के साथ–साथ संस्कृत–आधारित शिक्षा, ज्ञान के बाद के पाली संप्रदाय और फारसी / अरबी भाषाओं में प्राचीन मध्ययुगीन सीखने के विशाल भंडार के साथ, हिंदूबौद्ध–मुस्लिम शिक्षा की इमारत का निर्माण किया था ब्रिटिश शक्ति का उदय लेकिन, प्रणाली अवनति हो गई क्योंकि यह पुनर्जागरण के दौरान और बाद में यूरोप में प्रगति की गई प्रगतिओं को कम नहीं कर पाई थी, जिसके परिणामस्वरूप गंभीर शैक्षिक पिछड़ेपन का परिणाम था। ब्रिटिश प्रशासन द्वारा यूरोपीय शासन द्वारा स्कूलों के नेटवर्क के माध्यम से इस क्षेत्र में उदार, सार्वभौमिक शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए ब्रिटिश प्रशासन द्वारा सुधारात्मक कदम उठाए गए थे। हालांकि, एक महत्वपूर्ण मोड़ पंडित मदन मोहन मालवीय और सर सैयद अहमद खान जैसे शैक्षिकों के प्रयासों के कारण आया, जिन्होंने आधुनिक शिक्षा के कारणों को चुनौती दी और इसे फैलाने के ब्रिटिश प्रयासों का समर्थन किया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय,1887 की स्थापना आजादी के बाद बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के प्रवेश द्वार पर पंडित मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा, 1916 की स्थापना स्वतंत्रता के बाद, यू.पी. की स्थिति शिक्षा के सभी क्षेत्रों में वर्षों से निवेश करना जारी रखा है और सामान्य शैक्षिक पिछड़ेपन और निरक्षरता पर काबू पाने में महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। समग्र साक्षरता दर में वृद्धि राज्य सरकार द्वारा किए गए निरंतर बहुआयामी प्रयासों के कारण है। स्कूलों में बच्चों को, विशेष रूप से कमजोर वर्गों में नामांकन और बनाए रखने के लिएय वयस्क शिक्षा कार्यक्रमों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए और उच्च शिक्षा केंद्र स्थापित करने के लिए। नतीजतन, उत्तर प्रदेश सभी नीतियों के लिए सफलतापूर्वक सभी नीतियों को लागू करने वाले पहले कुछ राज्यों में स्थान दिया गया है निम्नलिखित क्रमिक प्रगति का संकेत है:

1981 में, उत्तर प्रदेश में साक्षरता दर 1991 में, वयस्क साक्षरता दर (15 वर्ष और उससे अधिक आयु वर्ग के लोगों के बीच प्रतिशत साक्षरता) 38: थी और 1998 में बढ़कर 49: हो गई, सात में 11: की वृद्धि –वर्ष की अवधि लेकिन, महिला और पुरुष साक्षरता के बीच का अंतर उच्च रहारू 1991 में, पुरुष साक्षरता 56: थी और महिला साक्षरता 25:ए 1999 में आठ साल बाद, सर्वेक्षण अनुमानों के मुताबिक, पुरुष साक्षरता 73: और महिला साक्षरता 43: रही एनएफएचएस।

राज्य में एक और उल्लेखनीय विशेषता कम उम्र के समूह में निरक्षरता के उच्च स्तर की दृढ़ता रही है, महिलाओं में, विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में, अधिक। 1980 के दशक के अंत में, 10–14 आयु वर्ग में निरक्षरता की घटनाएं ग्रामीण पुरुषों के लिए 32: और ग्रामीण महिलाओं के लिए 61: थीं; और 12–14 आयु वर्ग के सभी ग्रामीण लड़कियों के दो–तिहाई से अधिक स्कूल कभी नहीं गए। 7 आयु वर्ग में लड़कियों का केवल 25: पढ़ना और लिखने में सक्षम था और ग्रामीण क्षेत्रों में यह आंकड़ा 19: तक चला गया। अनुसूचित जातियों के लिए 11:, ग्रामीण क्षेत्रों में अनुसूचित जातियों के लिए 8: और 8 सबसे अधिक शैक्षिक रूप से पिछड़े जिलों में पूरे ग्रामीण आबादी के लिए: बुनियादी या आवश्यक शैक्षणिक प्राप्ति (प्राथमिक या माध्यमिक शिक्षा) के पूरा होने के संदर्भ में, 1992–1993 में, साक्षर पुरुषों का 50: और साक्षर महिलाओं का 40: आठ साल की स्कूली शिक्षा (प्राथमिक और मध्य चरणों)।

राज्य की शिक्षा प्रणाली की समस्याओं जटिल हैं सार्वजनिक उदासीनता के कारण पब्लिक स्कूलों को अक्षमता से चलाया जाता है निजी तौर पर विद्यालय (ईसाई मिशनरियों द्वारा चलाए गए कार्यक्रमों सहित) कार्यात्मक हैं, लेकिन महंगी हैं और इसलिए आम लोगों की पहुंच से परे है।

यदि एक नजर भारत की साक्षरता दर पर डालें तो 2011 में यह दर कुल 73.0 थी, जिसमें 80.9% पुरूषों की तथा 64.6% महिलाओं की, इसी प्रकार यदि उत्तर प्रदेश की साक्षरता दर का 2001 व 2011 के बीच तुलनात्मक अध्ययन करें तो पाएंगें कि यह दर बढ़ी है, जहां 2001 में पुरूष साक्षरता दर 70.23% व महिला साक्षरता दर 42.98% थी वहीं 2011 में पुरूषों की साक्षरता दर 77.3% व महिलाओं की 57.2% रही।

जनसंख्या को पूरी तरह से साक्षर बनाने के लिए गैर सरकारी संगठनों और अन्य संगठनों की मदद से सार्वजनिक भागीदारी को शामिल करने के लिए सरकार द्वारा कदम उठाए जा रहें हैं।

इस योजना में 2005–06 में 82.26% की तुलना में अपने कार्यान्वयन के पांच वर्ष के भीतर किसी भी बस्ती से उपयुक्त 28 पर एक माध्यमिक स्कूल उपलब्ध करवाना कक्षा नौ–दस के लिए 75% का सकल नामांकन अनुपात प्राप्त करने पर ध्यान दिया गया है, परन्तु अभी तक यह लक्ष्य प्राप्त नहीं हुआ है। सभी माध्यमिक स्कूलो को निर्धारित मानदंडों के अनुरूप बनाकर माध्यमिक स्तर पर दी जा रही शिक्षा की गुणवत्ता सुधार करना लैंगिक सामाजिक तथा निःशक्तता बाधाएँ हटाना अभी भी लक्ष्य से दूर दिखाई दे रहा है।

वर्तमान में, राज्य में 866,361 प्राथमिक विद्यालय, 8,459 उच्च माध्यमिक विद्यालय, 758 डिग्री कॉलेज और 26 विश्वविद्यालय हैं। पुरानी शिक्षा संस्थानों में से कुछ – ब्रिटिश, अग्रणी शिक्षाविदों और अन्य सामाजिक /धार्मिक सुधारकों द्वारा स्थापित – अभी भी कार्यात्मक हैं इसके अलावा, आजादी के बाद उच्च या तकनीकी शिक्षा के उच्च प्रतिस्पर्धी आईवी लीग केंद्रों की स्थापना की गई है। उच्च शिक्षा उत्तर प्रदेश के आकार को ध्यान में रखते हुए, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इसमें बड़ी संख्या में शैक्षिक और अनुसंधान संस्थान हैं। ये संस्थान या तो राज्य सरकार, केंद्र सरकार के अधिकार क्षेत्र में हैं, या निजी तौर पर चल रहे हैं। राज्य में दो आईआईटी कानपुर और वाराणसी, लखनऊ में एक आईआईएम, लखनऊ में एक लू, एक एनआईटी और इलाहाबाद में एक आईआईटी है। विभिन्न पाठ्यक्रम कार्यों में उच्च शिक्षा प्रदान करने के लिए उत्तर प्रदेश में राज्य और केंद्र सरकार के बहुत अच्छे विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई है।

**पूर्व अध्ययन समीक्षा–**

किसी भी षोध को सोद्देष्य तथा अधिक प्रभावी बनाने के दृश्टिकोण से यह आवष्यक हो जाता है। कि षोधार्थी अपनी षोध समस्या के समरूप पूर्व में किए गये अन्य षोध कार्यो के बारे में संक्षिप्त जानकारी प्राप्त कर ले। इसी दृश्टिकोण से षोधार्थी ने उत्तर प्रदेष माध्यमिक षिक्षा परिशर की परीक्षा प्रणाली एवं सुधार का तुलनात्मक अध्ययन पर किये गये कुछ वस्तु की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है।

**षोध क्षेत्र–**

प्रस्तुत अध्ययन उत्तर प्रदेष माध्यमिक षिक्षा परिवार परीक्षा के विभिन्न क्षेत्र का अध्ययन किया गया है। जिससे यह जानकारी प्राप्त हुई है कि आजकल कि षिक्षा प्रणाली पूरी तरह से षिक्षा का स्तर गिरता हुआ नजर आ रहा है। षिक्षा ना होकर एक व्यवसाय बनता जा रहा है। पूरा खेल रूपयों के आधार पर निर्भर है। षिक्षा जगत का कारोबार बन गया है।

**षोध विधि–**

षोधार्थी द्वारा प्रस्तुत षोध अध्ययन के विधिवत सम्पादन के लिए निम्न षोध–विधियों का चयन किया गया है।

**सर्वेक्षणात्मक विधि–**

अनुसंधान की वह पद्धति जिसके अन्तर्गत वर्तमान समय एवं स्थितियों में विद्यमान प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है सर्वेक्षण विधि कहलाती है। इस विधि मेंपूर्व निर्धारित प्रष्नों के माध्यम से प्रष्नावली साक्षात्कार एवं अनुसूची द्वारा जानकारी प्राप्त की जाती है। प्राप्त जानकारी या प्रदत्तों का संकलन करने के पष्चात उनका वर्गीकरण सारणीय प्रदत्तों से प्राप्त जानकारी की व्यवस्था एवं मूल्यांकन किया जाता है।

**षोध उपकर–**

प्रस्तुत षोध में षोधार्थी ने अपने न्यायदर्ष के वाछिंत चयन हेतु प्रष्नावली उपकरण का प्रयोग किया है।

**परिणामों का विष्लेशण एवं व्याख्या–**

षोधार्थी द्वारा किया गया कोई भी षोध कार्य सही अर्थो में तभी प्रतिबिम्बत होता है जब षोधार्थी द्वारा उस समस्या की वास्तविक स्थिति का मूल्यांकन किया जाय इसके लिये यह आवष्यक है कि षोधार्थी द्वारा षोध अध्ययन में उपयोग किये गये समस्त षोध उपकरणों द्वारा प्राप्त जानकारियों को व्यवस्थित क्रम में सारणीयबद्ध किया जाय जो निम्नानुसार है –

**सारणी क्र. 1**

**परीक्षा प्रणाली के संदर्भ**

| क्र. | विवरण | संख्या | प्रतिषत |
|---|---|---|---|
| 1. | संतुश्ट है | 21 | 42 |
| 2. | नहीं है | 29 | 58 |
| | योग | 50 | 100 |

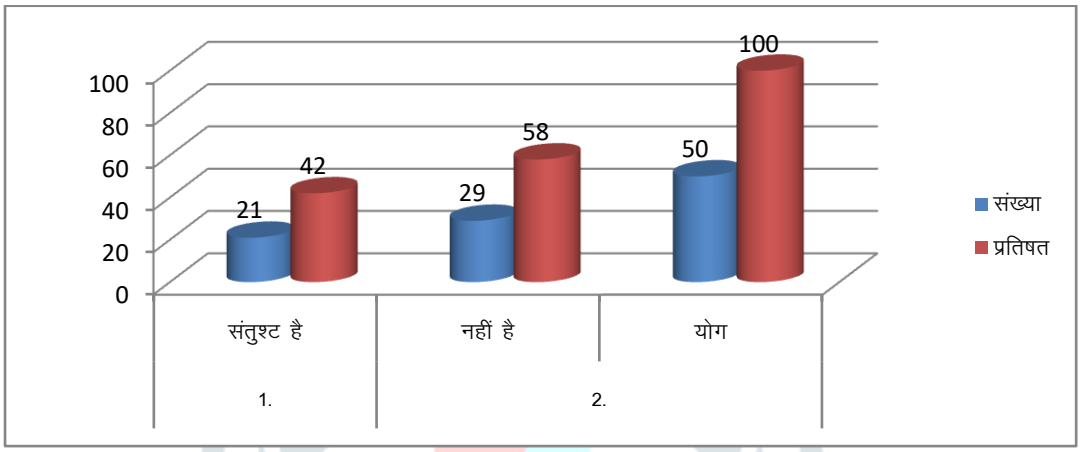


तालिका क्र. 1 से स्पश्ट होता है कि परीक्षा प्रणाली के संदर्भ में उत्तरदाताओं के विचारों पर 42 प्रतिषत संतुश्ट है। जबकि 58 प्रतिषत उत्तर दाता संतुश्ट नहीं है।

**सारणी क्र. 2**

**संतुश्ट न होने के कारण**

| क्र. | विवरण | संख्या | प्रतिषत |
|---|---|---|---|
| 1. | औपचारिक षिक्षा | 12 | 24 |
| 2. | कुषल षिक्षकों का अभाव | 18 | 36 |
| 3. | व्यवसायिक षिक्षा की कमी | 20 | 40 |
| | योग | 50 | 100 |

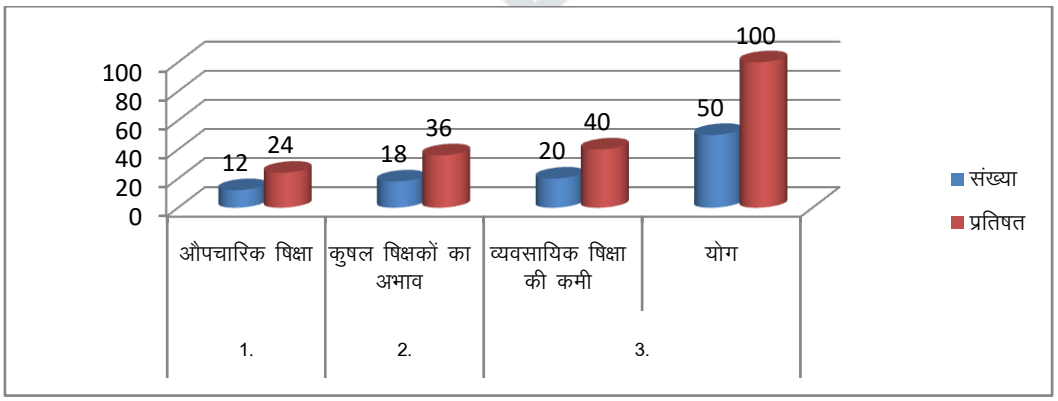


तालिका क्र. 2 से स्पश्ट होता है कि औपचारिक षिक्षा 24 प्रतिषत जबकि कुषल षिक्षकों का अभाव 36 प्रतिषत एव व्यवसायिक षिक्षा की कमी 40 प्रतिषत स्पश्ट है।

**सारणी क्र. 3**
**परीक्षा पद्धति**

| क्र. | विवरण | संख्या | प्रतिषत |
|---|---|---|---|
| 1. | दूशित परीखा पद्धति | 11 | 22 |
| 2. | बाहुबली का प्रभाव | 22 | 44 |
| 3. | निजी संस्थाओं कि अधिकता | 17 | 34 |
| | योग | 50 | 100 |

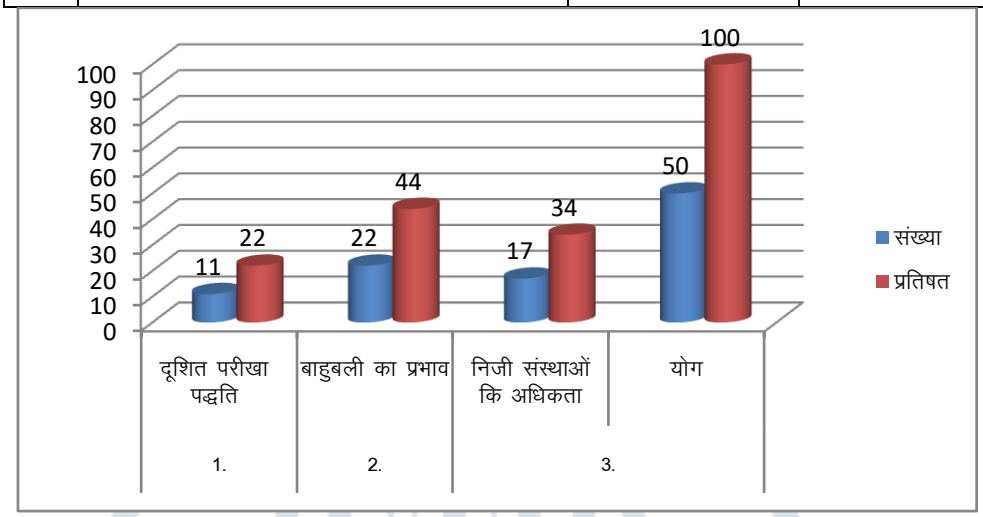


तालिका क्र. 3 में स्पश्ट होता है कि दूशित परीक्षा पद्धति 22 प्रतिषत है जबकि बाहुबली का प्रभाव 44 प्रतिशत है। वही निजी संस्थाओं की अधिकता 34 प्रतिषत है।

**सारणी क्र. 4**
**परीक्षा परिणाम**

| क्र. | विवरण | संख्या | प्रतिषत |
|---|---|---|---|
| 1. | आदर्ष मूल्यांकन | 18 | 36 |
| 2. | पक्षपातपूर्ण मूल्यांन | 6 | 12 |
| 3. | दबाव में आकर मूल्यांकन | 12 | 24 |
| 4. | लोभ वष | 14 | 28 |
| | योग | 50 | 100 |

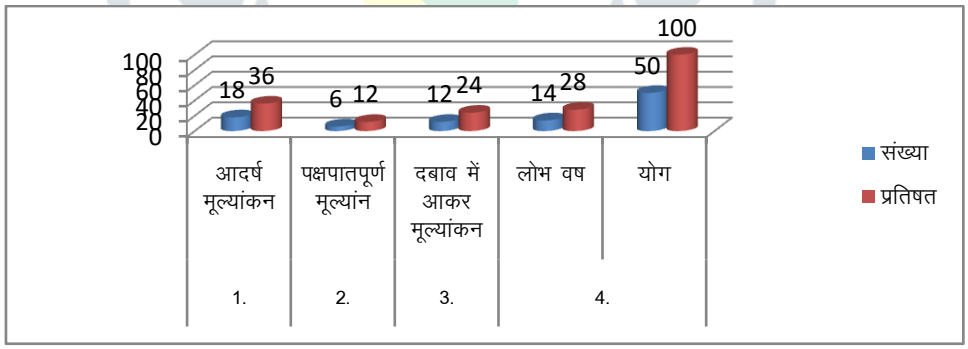


तालिका क्र. 4 में स्पश्ट है कि आदर्ष मूल्यांकन 36 प्रतिषत है। वही पक्षपात पूर्ण मूल्यांकन 12 प्रतिषत एवं दबाव में आकर मूल्यांकन 24 प्रतिषत है। जबकि लोभवष मूल्यांकन 28 प्रतिषत है।

**निश्कर्श एवं सुझाव –**

षोध अध्ययन उत्तर प्रदेष माध्यमिक षिक्षा परिशद की परीक्षा प्रणाली एवं सुधार का तुलनात्मक अध्ययन के अध्ययन से स्पश्ट होता है कि अध्ययनक्षेत्र में मूलरूप से षिक्षा प्रणाली एवं मूल्यांकन पद्धति को लेकर जो असंतोश की स्थिति है उसके प्रमुख कारण क्रमषः परीक्षा प्रणाली, मूल्यांकन पद्धति, षिक्षा की वर्तमान दषा, बाहुबलियों का प्रभाव, षिक्षकों को अल्प वेतनमान, पक्षपातपूर्ण मूल्यांकन आदि है। अध्ययन के साख्यकीय विष्लेशण पर गौर करें तो अध्ययनक्षेत्र के 42 प्रतिषत उत्तरदाता षिक्षा प्रणाली से संतुश्ट है। जबकि 58 प्रतिषत उत्तर दाता संतुश्ट नहीं है। षिक्षा से संतुश्ट न होने के कारणों में औपचारिक षिक्षा से 24 प्रतिषत जबकि कुषल षिक्षकों के अभाव से 36 प्रतिषत एव व्यवसायिक षिक्षा की कमी से 40 प्रतिषत उत्तरदाता असंतुश्ट है। इसी प्रकार दूशित परीक्षा पद्धति से 22 प्रतिषत है जबकि बाहुबली के प्रभाव से 44 प्रतिषत है। वही

निजी संस्थाओं की अधिकता से 34 प्रतिषत तथा आदर्ष मूल्यांकन से 36 प्रतिषत वही पक्षपात पूर्ण मूल्यांकन से 12 प्रतिषत एवं दबाव में आकर मूल्यांकन करने से 24 प्रतिषत जबकि लोभवष मूल्यांकन से 28 प्रतिषत उत्तरदाता संतुश्ट हैं।

इस तरह वर्तमान षिक्षा प्रणाली और मूल्यांन पद्धति से अध्ययन क्षेत्र के लोग संतुश्ट नहीं है। षिक्षा क्षेत्र में जहा कुषल षिक्षकों का अभाव है वहीं षिक्षा का व्यवसायीकरण तेजी से बढ़ रहा है। षिक्षा के मूल्यांकन से स्पश्ट होता है कि षिक्षा के मूल्यांकन को बाहुबली और धनलोलुप्ता प्रभावित कर रही है। निजी विद्यालयों एवं षासकीय विद्यालयों में षिक्षकों को मानदेय, वेतनभत्ते आदि की अनुकूल उपलब्धता न होने के कारण षिक्षकों का षिक्षण मूल्यांकन और अन्य दायित्वों का मूल्यांकन आदर्ष रूप में नहीं हो पा रहा है।

अध्ययन के प्रमुख सुझाव निम्नलिखित हैं–

1. षिक्षकों के चयन में योग्यता को वरियता मिलनी चाहिए।
2. षिक्षा नीति में षिक्षकों को प्रोत्साहन के साथ न्यूनतम वेतन निर्धारण की नीति होनी चाहिए।
3. षिक्षा के क्षेत्र में बढ़ती व्यवसायिकता पर नियंत्रण होना चाहिए।
4. षिक्षा के क्षेत्र में प्रदर्षन नहीं सादगी और उच्च गुणवत्ता पूर्ण होनी चाहिए।
5. षिक्षण मूल्यांकन पद्धति तट्स्थ होनी चाहिए।